श्री हनुमते नमः

गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी के द्वारा रचित

श्री हनुमान चालीसा

मानव जीवन के कल्याण के लिए विशेष अनुवाद
उपयोगिता, प्रयोग एवं पाठ विधि के साथ

श्रीराम दरबार की झांकी

सम्पादक- स्वामी आगमानन्द

प्रकाशक : मानस प्रकाशन नवगछिया

श्री हनुमान चालीसा

प्रथम संस्करण-17/09/2011 ई० शनिवार

विक्रमसंवत् 2068 विश्वकर्मा पूजा

प्रथम संस्करण प्रकाशकः-

श्री प्रभु प्रसाद राय उर्फ कारु राय

घर का पता : शहीद टोला, नवगछिया, भागलपुर

पता : बंदना हेंडलुम, हड़ीया पट्टी, नवगछिया, भागलपुर

© लेखकाधीन

पुस्तक प्राप्ति स्थान-

1. श्रीकृष्णा बुक सेलर, स्टेशन रोड, भागलपुर
2. पुस्तकघर (स्टेट बैंक के सामने) नवगछिया
3. अन्य पुस्तक केन्द्रों पर

सहयोग राशि - 15/-

प्रकाशक : मानस प्रकाशन, नवगछिया

मुद्रकः- गायत्री प्रिंटिंग प्रेस, मस्जिद रोड, नवगछिया

श्री हनुमते नमः

आत्मनिवेदन

नमोऽस्तु रुद्राय श्रीआञ्जनेयाय रामप्रियाय मरुतात्मजाय।
नमोऽस्तु श्रीकेसरिनंदनाय गुरुस्वरूपाय सनातनाय।।

नानापुराण निगमागमादिशास्त्ररससारज्ञ, सत्यसनातनधर्म-परमाचार्य, परमसंत, भक्तशिरोमणि सुकविराजाधीश्वर, श्रीमद्रामचरितमानस महाग्रंथप्रणेता, प्रातः स्मरणीय गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी महाराज विरचित, प्रकाशित प्रसिद्ध रचनाओं में, लघुकाय किन्तु गुरुत्वपूर्ण महत्त्वपूर्ण सुविख्यात एवं सकलजनकल्याणकारी रचना श्री हनुमान चालीसा है जो भक्तवाञ्छाकल्पतरूस्वरूप है। कुल तीन दोहा और चालीसा चौपाइयों में रचित इस लघुकाय ग्रंथ में श्रीरामनायामृतपरमोपासक रूद्रावतार, अंजनानंदन, मरूतात्मज, भक्तप्रवर परमकृपालु श्री हनुमान जी महाराज के व्यक्तित्वकृतित्त्व, कर्त्तृत्व-भर्तृत्व गुरुत्व-महत्त्व तथा उपासना रहस्य आदि का संक्षिप्त और सारगर्भित सिंहावलोकन है।

भक्तवाञ्छाकल्पतरूस्वरूप श्रीहनुमान चालीसा की प्रत्येक पंक्ति शाबरमंत्र है। विकराल कलिकाल के गाल से बाल-बाल बचने के लिए, स्वल्प साधन-सामग्री तथा चातुर्वर्ण्यकल्याण के लिए और सभी प्राणियों के परिणाम के लिए, आशुतोष औघड़दानी भूतनाथ भगवान शिव एवं पराप्रकृतिस्वरूपा पराम्बाश्रीपार्वती के सुसंवाद के फलस्वरुप युगधर्मस्वरूप शाबरमंत्र की आदि सर्जना हुई है। प्रायोगिक-वैज्ञानिक-अनुसंधानिक प्रमाणों से एवं शास्त्रों से भी सिद्ध है, कि शाबर मंत्र सद्यः फलदायी है पुष्टि व प्रमाण द्रष्टव्य है -

काल विलोकि जगहित हर गिरिजा। साबर मंत्र जाल जिन्ह सिरजा।।
अनमिल आखर अरथ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू।।

वैदिक (निगम) या तांत्रिक (आगम) किसी भी विधि द्वारा श्री हनुमान जी की उपासना के लिए शाबरमंत्रमय सुग्रंथ श्री हनुमान चालीसा निश्चय ही सभी मानव के लिए अतिहितकारी है!

आध्यात्मिक आधिभौतिक एवं आधिदैविक लाभ के लिए, पुरूषार्थ चतुष्ट्य के लिए श्री हनुमान चालीसा पाठ की विविध विधियाँ शास्त्रों में वर्णित हैं। इसे किसी भी ब्रह्मनिष्ठ श्रुतिरसज्ञ के सानिध्य में जाना जा सकता है। पर सर्वमान्य और सारगर्मित भाव यह है कि इसके मात्र नित्य पठन-मनन से भी श्री आंजनेय की कृपा-कादम्बरी बरसती ही रहती है।

प्रस्तुत आशीर्वादात्मक मंत्रात्मक लघुकाय ग्रंथ के नित्य पढ़ने से विद्यार्थियों का आत्मबल बढ़ता है, बुद्धि कुशाग्र होती है, स्मरण-शक्ति केंद्र जाग उठता है। सभी विद्याओं में गहरा ज्ञान प्राप्त होता है। विद्यार्थियों के अलावे सभी मानवों के लिए यह उतना ही फलदायी है। शरीर का सारा क्लेश, कष्ट एवं मन का सम्पूर्ण विकार इसके पठन-मनन से स्वमेव समाप्त हो जाता हैं। भूत पिशाच आदि प्रेतयोनियों के भव से, अभिमानी शत्रुओं के भाव से अग्नि में चलने के भय से, जल में डूबने नवग्रह की कुदृष्टि के भय से, अनेक प्रकार की महामारी आदि रोगों के भय से और समस्त सांसारिक संकटों के भय से विमुक्त कर अभय प्रदान करने वाले इस ग्रंथ में विविध-विलक्षणता विचक्षित हैं।

आध्यात्मिक अनुशीलन रहस्य से अभिज्ञात होता है कि श्री हनुमान चालीसा के मंत्रोपासना में सद्सद्विवेकी सेवाभावी संत सद्गुरूस्वरूप श्री हनुमान जी महाराज हैं एवं वेदवेदान्तवेद्य अनन्तानन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक राजराजेश्वर मर्यादापुरूषोत्तम प्रभुश्रीराम परमाराध्य हैं। केवल श्रद्धा-विश्वास और भक्ति-भाव से नित्य निरंतर निरतिशयानन्द होकर पाठ करने से भी साधक को परमात्मतत्त्व की सिद्धि हो जाती है अर्थात् साक्षात् श्री हनुमान एवं भगवान श्रीराम के दर्शन भी होते हैं। प्रत्यक्षानुमानागमादि प्रमाण-परिज्ञाता-प्रमाता, विविध-विशेषण-विश्लिष्ट वैज्ञानिक,

स्वयं भगवान शिव साक्षी हैं, गवाही हैं। कोई भी मानव अपने सर्वविध कल्याण के लिए इस प्रयोगात्मक स्वस्तिकारक ग्रंथ का पाठ कर आजमा सकता है आनन्दानुभूति पा सकता है।

श्री हनुमान चालीसा के संबंध में परिचर्चा करने की इच्छा तो बहुत थी किन्तु सम्प्रति यहाँ कुछ अधिक नैवेद्य निवेदित करना ठीक न होगा। पाठकों को एतदर्थ विस्तृत जानकारी के लिए मेरे द्वारा लिखित श्री हनुमान चालीसा की पदार्थ-भावार्थ युक्त सुविस्तृत टीका देखने-पढ़ने से परितोष होगा - ऐसा विश्वास है। यह पुस्तक आचार्य किशोर कुणाल जी द्वारा परिसेवित 'महावीर मंदिर प्रकाशन' पटना से प्रकाशित होने की संभावना है किन्तु.....।

अपने प्रियप्राणाधिक्य पूज्या पूज्यवर माता-पिता, परमपूज्य स्वगुरुवरवृंद के पदाम्बुजों में अगणित नमन अर्पित करता हूँ। अन्य अखिल आदरणीय गुरुजनों, परिजनों पुरजनों, हरिजनों, सज्जनों एवं दुर्जनों के प्रति भी अपनी नम्र-नति निवेदित करता हूँ।

प्रस्तुत सटीक श्रीहनुमान चालीसा का प्रकाशन अपनी पूज्या माता स्व० सोना देवी एवं पूज्य पिता स्व० घुघली प्र० राय की पुण्य स्मृति में सपत्नी श्री प्रभु प्र० राय (उर्फ कारू राय) ने सभक्ति जनकल्याण के लिए प्रकाशित कर एक महान् कार्य किया है। इसके लिए उनके समस्त परिवार को बहुत आशीर्वाद देता हूँ। अंत में त्रुटि हेतु क्षमा याचना एवं सम्यक् सुझाव याचना प्रेमी पाठकवृंद से करते हुए श्री अंजनानंदन से आर्त होकर प्रार्थना करता हूँ कि आपकी वस्तु आपको ही अर्पित है। आपके भक्तों साधकों के लिए यदि यह थोड़ा भी उपादेय तथा मार्गदर्शक सिद्ध हुआ तो आपकी बड़ी कृपा होगी। कृपार्थ निवेदित है -

"जय-जय जय हनुमान गुसाईं। कृपा करहु गुरूदेव की नाईं।।

विश्वकर्मा पूजा — हनुमच्चरणचंचरीक

17/09/2011, शनिवार — आगमानन्द

(शुचिक्षेत्र) नवगछिया, भागलपुर

श्री हनुमान चालीसा के मंत्र प्रयोग एवं उपयोगिता

सं०	उपयोग/लाभ	दूसरों पर प्रयोग
दो० 1,2	बल, बुद्धि विद्या हेतु	मधु में 9 बार पढ़कर 1 चम्मच खिलावे
चौ० 1,2	हनुमान कृपा हेतु	केवल जप करें
3,4	दुबुद्धि निवारण	लौंग इलाइची में पढ़कर खिलावें
5,6	ब्रह्मचर्य एव तेज प्रताप हेतु	केवल जप करें
7,8	विद्या एवं कार्य सिद्धि	मधु एवं लोंग
9, 10	भय एवं शत्रु शमन	फूल पढ़कर दे दें
11	मृत्यु कष्ट निवारण	गंगाजल में पढ़कर
12, 13	राम प्रेम के लिए	केवल जप करें
14,15	मुनि-देव कृपा के लिए	केवल जप करें
16	खोया ऐश्वर्य राजपद	केवल जप करें
17	खोया ऐश्वर्य राजपद	केवल जप करें
18, 19	कि न कार्य सिद्धि	भोज पत्र में मंत्र लिखकर देदें
20	कि न कार्य सिद्धि	भोज पत्र में मंत्र लिखकर देदें
21,22	रामकृपा एवं रक्षा हेतु	भोज पत्र में मंत्र लिखकर देदें
23	तेज प्राप्ति भय दुःख	केवल जप करें
24	भूत प्रेतादि बाधा दूर रहे	लोंग, गंगाजल पढ़कर दे दें
25	रोग शमन के लिए	दवाई या गंगाजल पढ़कर दे दें
26,27	संकट दूर एवं शुभकार्य	दवाई या गंगाजल पढ़कर दे दें
28,29	मनोरथ सिद्धि एवं प्रसिद्धि हेतु	केवल जप करें
30	साधु रक्षा एवं शत्रु शमन	केवल जप करें
31	अष्ट सिद्धि प्राप्ति	केवल जप करें
32	राम की दास्य भक्ति	केवल जप करें
33,34	दुख निवारण एवं भक्ति हेतु	केवल जप करें
35	सर्व सुख के लिए	केवल जप करें
36	सकल संकट नाश हेतु	कोई चीज में पढ़कर खिलावें
37	गुरु कृपा हेतु	केवल जप करें
38	बंधन मुक्ति हेतु	लालफूल पढ़कर दे दें
39	सर्व सिद्धि हेतु	लालफूल पढ़कर दे दें
40	हनुमत कृपा हेतु	केवल जप करें
41 दो०	रामदरबार कृपा दर्शन हेतु	केवल जप करें

विशेष प्रयोग एवं सिद्धि की विधियाँ सिद्ध साधकों से जानें। उपयोग हेतु 27, 54 या 108 बार या अधिक जप करें एवं प्रयोग हेतु 5,7,9,11 या अधिक वार जप करें।

श्रीहनुमान चालीसा

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मन मुकुर सुधार।
बरनऊँ रघुवर विमल यश जो दायक फल चार।।

बुद्धिहीन तनु जानि कै सुमिरौं पवन कुमार।
बल बुधि विधा देहु मोहि हरहु कलेश विकार।।

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।1।।
रामदूत अतुलित बलधामा। अंजनी पुत्र पवनसुत नामा।।2।।
महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।3।।
कंचन बरन विराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा।।4।।
हाथ बज्र अरू ध्वजा बिराजे। कांधे मूँज जनेऊ साजे।।5।।
संकर सुवन केसरी नंदन। वेज प्रताप महा जगवंदन।।6।।
विद्यावान गुनी अति चातुर। रामकाज करिबे को आतुर।।7।।
प्रभु चरित सुनिवे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।8।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। विकट रूप धरि लंक जरावा।।9।।
भीमरूप धरि असुर संहारे। रामचन्द्र के काज संवारे।।10।।
लाय सजीवन लखन जियाये। श्री रघुवीर हरषि उर लाये।।11
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहिसम भाई।।12
सहस बदन तुम्हारो जस गावै। अस कहि श्रीपति कंठ लगावै।।13
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा।।14
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कवि कोबिद कहि सके कहाँ ते।।15
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राजपद दीन्हा।।16
तुम्हरो मंत्र विभीषण माना। लंकेश्वर भए सब जग जाना।।17
जुग सहस्र योजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।18
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गए अचरज नाहीं।।19

दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।20
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।21
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रच्छक काहू को डरना।।22
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हांक तें काँपै।।23
भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महावीर जब नाम सुनावै।।24
नासैरोग हरै सब वीरा। जपत निरंतर हनुमत वीरा।।25
संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।26
सब पर राम तपस्वी राजा। तिनके काज सकज तुम साजा।।27
और मनोरथ जो कोई लावै। सोई अमित जीवनफल पावै।।28
चारो जुग परताप तुम्हारा। है प्रसिद्ध जगत उजियारा।।29
साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे।।30
अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता। अस बर दीन्ह जान की माता।।31
राम रसायन तुम्हारे पासा। सदा रहौ रघुपति के दासा।।32
तुम्हरे भजन राम को भावै। जनम जनम के दुख विसरावै।।33
अंतकाल रघुवरपुर जाई। जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई।।34
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेई सर्व सुख करई।।35
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलवीरा।।36
जय जय जय हनुमान गुसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं।।37
यह सतबार पाठ कर जोई। छूटहिं बंदि महासुख होई।।38
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीशा।।39
तुलसी दास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।।40

दो०- पवन तनय संकट हरन मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप।।

श्रीमहागुरवे परमाचार्य हनुमते नमः

श्री हनुमान चालीसा

(विशिष्ट अनुवाद)

दोहा -1

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मन मुकुर सुधार।
बरनऊँ रघुवर विमल यश जो दायक फल चार।।

पदार्थ - अपने परमाराध्य-परमाचार्य श्रीसद्गुरुदेवभागवान के कमनीय-कलित-कोमल, कण-कण कल्याणकारक पद-कमल के परम-पावन रज-कण से अपने अन्तःकरण-चतुष्ट्य-प्रधान -प्रमाता मन रूपी दर्पण को सुधारकर अर्थात् साफ-सुथराकर, धोकर, स्वच्छ-पावन-निर्मल कर, मैं स्वाराध्य, सत्य सनातन धर्म के मूर्तिमान स्वरुप, रघुकुल कमल श्रेष्ठ, जानकीजीवननाथ मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान् श्रीरामचन्द्र जी के विमल-अर्थात् स्वच्छ, मलरहित, सकल विकार रहित, पापादि दोष-मुक्त और सर्वजनकल्याणकारी यश का वर्णन करता हूँ, जो भारतीय संस्कृति-सभ्यता के शाश्वत मानदंड पुरुषार्थ चतुष्ट्य अर्थात् मानवजीवन के चार महाफल यानी धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को देनेवाला है तथा शान्ति -प्रगति-भक्ति-शक्ति और परमगति प्रदान करने वाला है।

सारमहत्त्व - सत्यसनातन धर्म परमाचार्य प्रातः स्मरणीय संतशिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज विरचित प्रस्तुत दोहा अत्यन्त प्रसिद्ध है। यह दोहा श्रीमद्रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड में भी है। गुरु या आचार्य का स्मृत्याभासित स्मरण कर रघुकुल श्रेष्ठ श्रीराम के पावन यश-सौरभ- वर्णन अभिप्रेत या जीवन लक्ष्य है। प्रस्तुत दोहा, विभिन्न सिद्धयोगियों के अनुसार शाबर मंत्रवत् है और शाबरमंत्र ही है। भक्ति भाव पूर्वक नित्य पाठ

से गुरुभक्ति, इष्ट-निष्ठा, अभीष्ट प्राप्ति, विद्या, बुद्धि बल ऐश्वर्य आदि अनेक तत्त्व साधक को प्राप्त होते है किंबहुना शान्ति और मुक्ति भी।

दोहा -2

बुद्धिहीन तनु जानि कै सुमिरौं पवन कुमार।
बल बुधि विधा देहु मोहि हरहु कलेश विकार।।

पदार्थ - तीक्ष्णदृष्टि - तत्त्वज्ञ तत्सत्भावसंस्थ तामरस तमारि तुलसीदासजीमहाराज कहते हैं -

"हे जगत्प्राण पवनदेव के प्राणसम प्यारे न्यारे पुत्र! मैं अपने आपको अतिशय बुद्धिरहित स्वभाववाला जानकर आपका स्मरण या जप या सुमिरन करता हूँ अथवा शरणागत होकर सुमिरन कर रहा हूँ। अतः आप मुझको अपना अधम शिष्य मानकर मेरी भक्ति से प्रसन्न होकर आशीर्वाद स्वरुप बल बुद्धि और विद्या प्रदान करें साथ ही मन के सारे क्लेशों, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर-इन छः विकारों एवं अन्य सभी प्रकार के विकारों को दूर कर सन्मार्ग की ओर सद्गति सम्प्राप्ति के लिए उत्प्रेरित करें।

महत्त्व - (श्री हनुमान चालीसा का प्रस्तुत दोहा अतिशय महत्त्वपूर्ण है। इस दोहा के अर्थ से पता चलता है कि यह मानवता के लिए कितना कल्याणकारी है। यह शाबरमंत्र स्वरुप है। इसके नित्य पढ़ने से, स्मरण करने से एवं जप करने से मानव की बुद्धिहीनता समाप्त होती है और उसमें बल, बुद्धि तथा विद्या या ज्ञान का निरन्तर विकास ही होता रहता है। वैसे तो यह मंत्र सभी मानवों के लिए अत्यन्त उपकारक है तथापि विशेषतः छात्रों के लिए यह महान कल्याणकारक है। इससे विलुप्त स्मृति आती है अर्थात् यादगार शक्ति बढ़ता है। अध्ययन में रूचि होती है एवं विभिन्न संकटों-भयों से मुक्त होकर जापक विश्ववंद्य हो जाता है।

चौ०- **जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।**
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।1।।

रामदूत अतुलित बलधामा। अंजनी
पुत्र पवनसुत नामा।।2।।

पदार्थ - हे मारूति नंदन मंगलमूर्ति हनुमान जी महाराज!

आपकी सदा-सर्वदा-सर्वत्र-सर्वकाल जय जयकार होवे। आप आध्यात्मिक आधिभौतिक-अधिदैहिक-इन तीनों ज्ञान एवं अन्यान्य सभी प्रकार के ज्ञान विज्ञान के सागर है और सात्त्विक राजसी-तामसी, तीनों गुणों के साथ ही अन्य सभी प्रकार के गुन के भी समुद्र हैं। पृथ्वी-पाताल-आकाश यानी भूर्भुवःस्वः इन तीनों लोकों में 'जय कपीस' अर्थात् सम्पूर्ण कपियों के स्वामी या अधिकारी कपीश्वर हनुमान के पावन नाम का उच्चारण और जयकार होता रहता है और जय-जयकार होता रहेगा।

परम सौभाग्यशालिनी माता अंजनी के प्राण प्यारे पुत्र एवं वायुदेव के अतिशय दुलारे तनय का जगत्प्रसिद्ध परिचयात्मक नाम अंजनी पुत्र और पावन सुत है। मर्यादापुरूषोत्तम भगवान श्रीराम के अत्यन्त प्रिय, विश्वस्त, कर्मठ एवं सुयोग्य दूत महावीर हनुमान हैं। जिस बल के साथ अन्य किसी भी बल की तुलना न की जा सके अर्थात् जिसके बल के समक्ष संसार का सारा-का-सारा बल तुच्छ लगे वे ऐसे ही अतुलनीय बल के धाम हैं यानी अपरिसीम शक्ति के अक्षय केन्द्र और स्रोत हैं।

चौ०- **महावीर विक्रम बजरंगी।**
कुमति निवार सुमति के संगी।।3।।
कंचन बरन विराज सुबेसा।
कानन कुंडल कुंचित केसा।।4।।

पदार्थ - हे महावीर हनुमानजी। आप बज्र के समान अत्यन्न कठोर अंगवाले, पराक्रम की पराकाष्ठा पर सर्वदा प्रतिष्ठित रहनेवाले सम्पूर्ण वीर समुदाय में सबसे अधिक वीरता धारण करनेवाले हैं। हे महावीर! आप 'कुमति निवारक अर्थात् खराब बुद्धि को दूर करनेवाले एवं सुमति के संगी अर्थात् अच्छी बुद्धि वाले के सहायक और मित्र हैं।

तात्पर्य शुभ, सुन्दर कल्याण कारक विवेक प्रदान करने वाले हैं।

अंजनानंदवर्धन श्री हनुमान जी महाराज का पूरा शरीर कंचन अर्थात् सोना के समान सुनहला है। दोनों कानों में दिव्य मंगल कुंडल शोभायमान है तथा सावन-घन-वन सदृश काले-काले-घुंघराले केशराशि से युक्त सुन्दर शुभकर वेष में आप सुविराजित एवं सुशोभित हैं।

चौ०-

हाथ बज्र अरू ध्वजा बिराजे।
कांधे मूँज जनेऊ साजे।।5।।
संकर सुवन केसरी नंदन।
वेज प्रताप महा जगवंदन।।6।।

पदार्थ - श्री महावीर जी के एक हाथ में अत्यन्त कठोर बज्र या फिर बज्र के समान कठोर गदा तथा दूसरे हाथ में विश्वविजयिनी अतिमंगलकारिणी लहराती-फहराती ध्वजा विद्यमान है। कांधे पर नैष्ठिक ब्रह्मचारी का पावन प्रतीक मूंज का जनेऊ सुशोभित है।

भगवान शंकर के औरस पुत्र तथा कपिराज केसरी के क्षेत्रज पुत्र श्री हनुमान महान तजस्वी प्रतापी एवं जगत्वंद्य हैं।

चौ०

विद्यावान गुनी अति चातुर।
रामकाज करिबे को आतुर।।7।।
प्रभु चरित सुनिवे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया।।8।।

पदार्थ - श्री आञ्जनेय चरम विद्यावान हैं। अर्थात् सर्वविद्या मार्त्तण्ड-मंडित, महापंडित, महामनीषी, मानसकथा-मर्मज्ञ, महाधिवक्ता महावीर अतिशय गुणवान एवं अत्यन्न चतुर हैं। अति कार्यकुशल होने के कारण सत्य-सनातन-धर्म के विग्रहवान मर्यादित

मूर्तिमान स्वरूप प्रभु श्रीराम के प्रत्येक कार्य को पल-छल में प्रसन्नता पूर्वक करने को आप सेवकरूप में अतिशय उत्सुकातुर रहते हैं।

हे मंगलकर्ता हनुमान! भक्त हृदय अनुरंजक, भवभमंजक भगवान श्रीराम के परम पावन लोकानुकरणीय चरित्र को सुननेवाला आपके समान दूसरा कौन रसिक है? अर्थात् आपके जैसा श्रीरामचरितमानसामृत पायक रसिक और कोई नहीं है। इसी रसिक स्वभाव के कारण तो सदा सर्वदा आपके मन-मंदिर में कौशल्यानंदन प्रभुश्रीरामचन्द्रजी सुमित्रानंदन रामानुज श्री लक्ष्मण जी एवं जनकनन्दिनी प्रभु सहधर्मिणी श्री जानकी जी प्रेम भक्तिवश आपके हृदय में अविरल निवास करते हैं।

चौ०-

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
विकट रूप धरि लंक जरावा।।9।।
भीमरूप धरि असुर संहारे।
रामचन्द्र के काज संवारे।।10।।

पदार्थ - हे पवनतनय! आपने अत्यन्त छोटा रूप अर्थात् सौम्य सुशील सहज संतस्वरूप में लंका में प्रभु श्रीराम की धर्मपत्नी, भगवती भक्तिस्वरूपा माता श्री सीताजी को दर्शन दिया एवं अत्यन्त बड़ा रूप अर्थात् काल-कराल-विकराल रूप धारण कर लंका जलाया। अत्यन्त भयानक अर्थात् संहारकारी रौद्ररूप धारण कर सारे असुरों का विनाश किया एवं स्वामी श्रीराम के सारे कार्य अपने हाथ से सुन्दर सहज ढंग से सम्पादित किया।

चौ०

लाय सजीवन लखन जियाये।
श्री रघुवीर हरषि उर लाये।।11

पदार्थ - हे केसरी नंदन! जब लंका के समरांगन में रामानुज लखनलाल जी को शक्ति बाण से मूर्च्छा हुई थी तो आपने पर्वत समेत संजीवनी

बूटी नामक महौषधि को लाया और तत्क्षण अनुपान कराकर उन्हें तुरन्त जीवंत-प्राणवंत किया। आपके अनेक अत्याश्चर्यपूर्ण कार्य को एवं संजीवनी लाने के कार्य को अत्यन्त सहजरूप से सत्वर सम्पादित करते देखकर, दनुजकुलनिकंदन दशरथनंदन श्री रघुनन्दन ने अतिशय हर्षित होकर, प्रेमानन्दनिमज्जित सेवक जानकर आपको अपने हृदय से आत्मीयता पूर्वक लगा लिया।

चौ०-

रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहिसम भाई।।12

पदार्थ - हे प्रभंजननंदन महावीर! आप अतिशय बड़भागी है क्योंकि स्वयं रघुकुलस्वामी अवधपति मर्यादापुरुषोत्तम भगवान श्री राम ने निजमुखारविन्द से बहुत-बहुत बार अनेकानेक आश्चर्यजनक कार्यों के सम्पादन प्रतियोगिता में सर्वप्रथम स्थान संप्राप्ति करने के कारण एवं विविध प्रकार के ज्ञान-विज्ञान-विवेक-वैराज्ञादि गुणगणान्वित होने के कारण आपकी यथार्थ धरातल पर बहुत बड़ाई की है। अर्थात् श्रीरघुपति ने आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है प्राशंस्य भाव में प्रभु कहते हैं - हे अंजनानंदन! हे मारूतिनंदन!! तुम मेरे हो, तुम मेरे प्रिय हो, 'भारत के समान अत्यन्त प्रिय हो, श्री भरत के समान ही मेरे प्रिय भाई हो, तात्पर्य है कि भारत की भीरुतामुक्त-भायप-भक्ति- भावना स्वधर्मानुष्ठाता ब्रह्मचारी हनुमान की निर्विकार-निष्कल- निर्मल-निगमागमिक निस्पादित निर्भरा-भक्ति भावना समान रहने के भी कारण श्रीरघुपति ने बहुत सी बड़ाई करते हुए कहा है कि तुम भरत सदृश मेरे प्रिय भाई हो।

चौ०

सहस बदन तुम्हारो जस गावै।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावै।।13

पदार्थ - हे यशस्वी महामते मारुतसुत! हजारों वदन या मुख मंडल वाले शेषराज अथवा हजारों-हजार मानवात्मा तुम्हारे

सहस्र-शतदल-सम-सुरभित यश समूह का निरंतर गायन करते रहते हैं तथा अपना जीवन-जन्म सफलीभूत कर परमानंद पाते रहते हैं। यह मधुर वचन, श्री हनुमानजी के प्रति कहकर, बार-बार जनकात्मजा श्री किशोरी सीता के प्राणातिप्रिय पति भगवान श्रीराम अपने प्रिय सेवक-शिष्य आंजनेय को बार-बार प्रेमपूर्वक गले लगाते हैं।

चौ०- **सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।**
नारद सारद सहित अहीसा।।14

पदार्थ - हे वायुदेवात्मज! सनक, सनातन, सनन्दन व सनत्कुमारजी-चारो भाई, ब्रह्माजी, वशिष्ठजी वाल्मीकिजी आदि मुनीश्वरजी देवर्षि नारद, वाग्देवी सरस्वती के साथ-साथ सपंकुलाधिराज सहस्रफनधारी शेषराज तथा -

चौ०

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।
कवि कोबिद कहि सके कहाँ ते।।15

पदार्थ - मृत्यु के देवता एवं दक्षिण दिशा के देवता यमराज, धन के स्वामी या उत्तर दिशा के देवता कुबेर एवं दशो दिशा के अधिकारीगण विगण समस्त कविगण एवं मनीषीगण आदि संसार में जो भी धर्म प्रवक्ता है वे सम्पूर्ण रूप से तुम्हारे यश और चरित्र का वर्णन कहाँ कर सकते अर्थात् नहीं कर सकते।

चौ०-

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राजपद दीन्हा।।16

पदार्थ - आपने वानराधिपति किष्किन्धानरेश सुग्रीव को शरणागत रक्षक श्रीराम से मिलाकर, उन्हें राजा का पद प्रदान कराकर उनका महान उपकार किया है।

चौ०-

तुम्हरो मंत्र विभीषण माना।
लंकेश्वर भए सब जग जाना।।17

पदार्थ -हे रामदूत! आपकी धर्मसम्मत नीतियुक्त मंत्रणा को रावणानुज भक्तहृदय श्री विभीषण जी ने मन से माना, फलस्वरूप रावण मृत्यु के बाद वे लंका के एक छत्र अधिपति हो गए, यह रहस्य पूरे संसार ने जान लिया है।

चौ०

जुग सहस्र योजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।18

पदार्थ - हे अंजनानंदन! जहाँ जाने में सहस्रों युग लग सकते हैं, उस हजारों-हजार योजनों पर स्थित भुवन भास्कर सूर्य को भी आपने अपने बाल-काल में ही अतिशय मीठा फल समझ कर निगल लिया था।

चौ०

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लाँघि गए अचरज नाहीं।।19

पदार्थ - इतना ही नहीं, आपने और भी अनेक प्रशंस्य कार्य किया है। प्रभुवर श्री रघुवर दी हुई श्री रामनामांकित मुद्रिका (अंगूठी) को मुख में लेकर अत्यन्त विशाल समुद्र लांघ गए - क्या यह आश्चर्य नहीं है? अर्थात् अत्याश्चर्यजनक है और किसी को भ्रमवश आश्चर्य नहीं करना चाहिए।

चौ०-

दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।20

पदार्थ - हे कपीश्वर! संसार में जितने भी दुर्गम या कठिन से कठिन

कार्य हैं आपके अनुग्रह से या आपकी कृपा से वो अति सुगम हो जाते है अथवा सरल हो जाते हैं।

चौ०-

राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।21

पदार्थ - हे कपीश्वर! आप तो जानकी जीवननाथ श्री राम के दरबार के मुख्य संरक्षक हो अथवा प्रभु के दुआर के (द्वार के) द्वारपाल हो। आपकी आज्ञा के बिना श्रीरामदरबार में या परमात्मा के परमधाम में किसी का प्रवेश ही नहीं होता।

चौ०

सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रच्छक काहू को डरना।।22

पदार्थ - लौकिक-पारलौकि, आध्यात्मिक-आधिदैहिक-आधिभौतिक सुख अर्थात् संसार का समग्र सुख आपकी शरणागति होने पर मानव प्राप्त कर लेता है। अतः हम आपके शरण में है, आपके संरक्षण में हैं। जब आप स्वयं हमारे जीवनधन रक्षक हैं तो फिर हमें किसलिए? कब? कहाँ? क्यों? किसका डर लगेगा? अर्थात् किसी से भी भय नहीं है।

चौ०

आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हांक तें काँपै।।23

पदार्थ - आपका अप्रतिम तेज अपरिमित है। अतः आप अपना प्रकाशमान प्रभावशाली तेज स्वयं ही संभालिए। आपके एक मात्र तुमुलनाद से या एक पुकार से ही आकाश पाताल स्वर्ग तीनों लोक, थर-थर, थर-थर कर काँपने लगता है।

चौ०-

भूत पिसाच निकट नहिं आवै।
महावीर जब नाम सुनावै।।24

पदार्थ -

हे महावीर! जो आपके पावन नाम का स्वयं भी स्मरण करते हैं एवं अन्योपासकों से भी करवाते हैं या जहाँ कही भी जब लोग आपके महावीर, हनुमान आदिनाम का उच्चारण करते हैं उस व्यक्ति के पास या उस स्थान पर भूत पिशाच आदि निकृष्ट योनियाँ नहीं आ सकती। यह ध्रुव सत्य है एवं

चौ०-

नासै रोग हरै सब वीरा।
जपत निरंतर हनुमत वीरा।।25

पदार्थ - जो निरंतर या लगातार वीरों में वीर महावीर हनुमान के मंगलकारी नाम का जपन करते है निश्चय ही उन आप्तकाम मानवों के या सम्पूर्ण जीवों के सारे रोग स्वयं नष्ट हो जाते हैं एवं सारी पीड़ा-व्यथा-वेदना स्वयमेव हरण हो जाती या मिट जाती है।

चौ०-

संकट तें हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।26

पदार्थ - जो मानव शास्त्रोचित शुद्धमन से, स्वकर्म से ओर वचन से यानी हनुमन्नामाम्भोजधारण से या शास्त्रसम्मत् मधुमाधुर्य समन्वित हनुमत चरित से हनुमान का हृदय में ध्यान करते हैं उनको वे निश्चित रूप से सृष्टि के सारे संकटों से छुड़ा देते है, मुक्त कर देते हैं।

चौ०

सब पर राम तपस्वी राजा। तिनके
काज सकज तुम साजा।।27

पदार्थ - सातो द्वीप समेत सम्पूर्ण पृथ्वी पर, सम्पूर्ण जीवों-अजीवों पर अखिल ब्रह्माण्ड पर सनातन-शास्त्र सम्मत शासन करने वाले परमतपस्वी राजा श्रीमान्महाराजधिराजाधिपतिराघवेन्द्र सरकार राम है। हे हनुमान! स्वामी राम के प्रिय सेवक होने के नाते उनके सारे कार्यों को आपने अत्यन्त सहज-सरल ढंग से सम्पूर्णतः सम्पादित किया।

चौ०-

और मनोरथ जो कोई लावै।
सोई अमित जीवनफल पावै।।28

पदार्थ - जो कोई मनुष्य अनेकानेक मनोरथ को लेकर या अपनी कल्याण कामना को लेकर आपके शरण हो जाता है वह निःसंशय, धर्मार्थकाममोक्षचतुष्टयजीवन फल अमित परिमाण में अर्थात् असीमित रूप में आता है।

चौ०-

चारो जुग परताप तुम्हारा।
है प्रसिद्ध जगत उजियारा।।29

पदार्थ - हे प्रभुपादपाथोजप्रेमी पवनपुत्र! आपका पराक्रम पूर्ण प्रताप चारो युगों में पख्यिाप्त है तथा सम्पूर्ण संसार में स्वच्छ-निर्मल-उज्ज्वल चारित्रिक-कीर्ति प्रकाश प्रसिद्धि के साथ फैला हुआ है यानि आप विश्ववंद्य हैं।

चौ०-

साधु संत के तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे।।30

पदार्थ - हे राम के दुलारे! आप ही समग्र असुरों का संहार कर, साधु चरित जीवों एवं ऋषि-मुनि-संत महात्माओं को अनेक आत्यन्तिक आपदाओं से सदा भवसिंधु में सुरक्षा प्रदान करनेवाले हैं।

चौ०

अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता।
अस बर दीन्ह जान की माता।।31

पदार्थ - हे सर्वसिद्धिस्वामी! आप अष्ट सिद्धियों (अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्त, प्राकाम्य, ईशित्व वशित्व) के नौ निधियों (नील, खर्व आदि) के दाता है अर्थात् आप अष्ट-सिद्धि नवनिधि पूर्ण स्वयं भी है और समर्पित साधकों आस्तिक भक्तों को प्रदान भी करते हैं। यह शुभ सुन्दर वरदान आपको जनकनंदिनि-जगद्वंदिनि-नंदित मेदिनि-माता-जानकी ने लोकसेवार्थ प्रसन्नतापूर्वक दिया है।

चौ०-

राम रसायन तुम्हारे पासा।
सदा रहौ रघुपति के दासा।।32

पदार्थ -हे श्रीरामचन्द्रचरणोत्पल चंचरीक! आप सदा-सर्वदा-सर्वथा अनाथों के नाथ जगन्नाथ श्री रघुनाथजी की दास्य भक्तिपूर्ण सेवा करते रहे हैं अर्थात् सदा रघुपतिदास रहे हैं। अतः आपके पास कविराज-दुर्लज भवरोग-महौषधिस्वरूप श्रीरामनामामृतसरसायना गार है। अर्थात् आपके पास श्रीराम-रसायन है, आप उसे कृपाकर आर्त्त भक्तों को प्रसाद स्वरुप वितरित कर लोक कल्याण करते एवं सत्यसनातन धर्म की सुरक्षा करते हैं।

चौ०-

तुम्हरे भजन राम को भावै। जनम
जनम के दुख विसरावै।।33

पदार्थ - हे पवन कुमार! आपका भजन भगवान श्रीराम को भी अच्छा लगता है। आपके द्वारा किए गए भजन से प्रभु परम प्रसन्न होते हैं या फिर प्रभु श्रीराम भी आपका भजन भाववश करते हैं। भगवान और भक्त का यह उभय-परस्पर-प्रमात्मक भजन-भाव

पढ़ने-सुनने से अधम-अकिंचन मानव, जन्म : जन्मान्तर के दु:ख को सदाके लिए भूल जाता है।

चौ०- अंतकाल रघुवरपुर जाई।
जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई।।34

पदार्थ -

हे रामभक्तशिरोमणि! आपका भजन भक्ति-भाव-श्रद्धा विश्वास पूर्वक जो भी मानव अन्तरात्मा से करता है वह निश्यय ही अन्तकाल में अर्थात् शरीर छोड़ने पर रघुवरपुर यानी परमद्याम श्री साकेत धाम या कैवल्य धाम जाता है। वह जब भी, भगवान की ही सदिच्छा-सत्प्रेरणा से भू-मंडल पर जन्म ग्रहण करता है, श्रीहरि का भक्त ही कहलाता है अर्थात् श्रीहरि भक्त के यहाँ, प्रभुभक्त की ही संज्ञापाता है।

चौ०-

और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेई सर्व सुख करई।।35

पदार्थ -

महाव्याल सदृश कराल कलिकाल के गाल में अत्यल्प समयान्तराल में मानव यदि किंचिदपि सनातन धर्माचार्यचरण पंकजसमर्पणभावान्वित होकर, अपने हृदय में अन्य किसी भी देवता को न रखकर या धारणकर केवल हनुमान की ही उपासना करने पर भी वह संसार का सम्पूर्ण सुख, सर्वार्थ सिद्धि कृपा सुख या परम सुख प्राप्त कर लेता है। निश्चय ही रूद्रावतार सुख प्राप्त कर लेता है। निश्चय ही रूद्रावतार हनुमान की सेवा सर्वसुखकारक है।

(इस मंत्रात्मक दोहा का विविध-विशिष्ट अर्थ व भावपूर्ण - व्याख्या 'सटीक भावार्थ हनुमान चालीसा' में द्रष्टव्य है।)

चौ०

संकट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलवीरा।।36

पदार्थ -

जो (कोई भी) मानव धीर-वीर-गंभीर बलवीर महावीर का, सकल-विकट-संकट-झट-हरण श्री हनुमान जी का समरण, गुणकीर्तन, जप-ध्यान श्रद्धा-विश्वास संयुक्त सुभक्ति से करता है उसका सब प्रकार का सम्पूर्ण संकट, उसकी व्यथा-वेदना-पीड़ा, किमधिकम् समग्र कष्ट सदा के लिए समाप्त हो जाता है।

चौ०-

जय जय जय हनुमान गुसाईं।
कृपा करहु गुरुदेव की नाईं।।37

पदार्थ -

हे सर्वेन्द्रिय-स्वामी गोस्वामी हनुमानजी! आपकी जय हो, सदा-सर्वदा आपकी जय हो, सर्वत्र-सर्वरूपेण-सर्वतोमावेन सर्वत: आपकी जय जयकार हो। जय होता रहा है, जय हो रहा है और जय जयकार होता रहेगा। आप स्वयं श्रीसद्गुरुस्वरूप हैं, जगद्गुरु स्वरूप हैं, आप सनातनधर्म के परमाचार्य हैं अत: आप ही हम अध-अधम-अकिंचन शिष्य के उद्धारक आचार्य (गुरु) हैं। आप श्रीसद्गुरुदेव के समान मुझ अकिंचन - आर्त्त शिष्य पर अकारण-कारूणिक-कृपा कर पावन भगवन्नामदान देकर कृत्यकृत्य कीजिए अर्थात् अपनी कृपादृष्टि-दयावृष्टि-सदगुण-सृष्टि की करूणा कादम्बरी बरसाते रहिए जिससे कि मेरा शीघ्र ही उद्धार हो जाए।

चौ०

यह सतबार पाठ कर जोई।
छूटहिं बंदि महासुख होई।।38

पदार्थ -

जो कोई मनुष्य इस मंत्रमय महान धर्मग्रंथ श्री हनुमान चालीसा का सौ बार या सात बार भी नित्य पाठ करता है वह संसार के किसी भी बंधन से निश्चय ही मुक्त होता है यहाँ तक कि माया का मजबूत बंधन भी स्वयमेव टूट जाता है और वह महान सुख अर्थात् पारलौकिक सुख और फिर लौकिक राजसी सुख परमानन्दमय श्रीसाकेतधाम का परमसुख प्राप्त करता है।

चौ०- **जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा।**
होय सिद्धि साखी गौरीशा।।39

पदार्थ - श्रद्धा-विश्वास एवं भक्ति-भावना से नित्य नियमपूर्वक शास्त्रीय अनुबंधों के अनुकूल प्रेमपूर्वक जो भी मानव इस मंत्रमय महानग्रंथ श्री हनुमानचालीसा का पाठ करते हैं उन्हें सर्वार्थ सिद्धि होती हैं एवं जो भी मानव पढ़ेगे उन्हें भी सब प्रकार की सिद्धि, किंबहुना ब्रह्मविद्या की चरम सिद्धि या तत्त्व सिद्धि निःसंदेह प्राप्त होगी। इस रहस्य के साक्षी या गवाही स्वयं गौरीपति आशुतोष औघड़दानी योगीश्वर भगवान शिव हैं। अतः परमात्मतत्त्वसिद्धि में भी किसी को कोई संशय नहीं होना चाहिए।

चौ०-

तुलसी दास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।।40

पदार्थ -

सत्यसनातनधर्माचार्य परमाचार्य प्रातः स्मरणीय श्रीमदगोस्वामितुलसीदासजी महाराज कहते हैं - हे हनुमानजी। तुलसीदास सदा राम-दास रहा है यानी मैं सदा-सर्वदा सर्वान्तर्यामी-सर्वेश्वर-सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान सर्वजगदाधार-सर्वाधिष्ठान भक्त-मय-भंजक श्री हरि का अंतरग अकिंचन सेवक रहा हूँ। इसलिए हे अनाथों के नाथ श्रीरघुनाथ के परमकृपापात्र भक्तशिरोमणि मेरे हृदयनाथ श्री हनुमान जी। आप मेरे हृदय में

चिरकाल-चिरन्तन निवास कीजिए जिससे मेरा मानव जन्म सार्थक व कृतकृत्य हो जाए क्योंकि आपके हृदय में तो अविकल, अनुज लक्ष्मण जी, सौन्दर्य-माधुर्य-सुधा-सिंधु-स्वरूपा श्री सीता माता जी समेत सर्वोपरि सरकार प्रभु श्री रामचन्द्र जी बसते हैं।

चौ०

पवन तनय संकट हरन मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप।।

पदार्थ -

हे पवनदेव के प्राणोपम परम प्यारे पुत्र श्री हनुमान जी महाराज! आप सभी मानव समुदाय के सब प्रकार के संकट को हरनेवाले या सर्वापत्ति को समूल नष्ट करनेवाले है। आप तो महामंगलमूर्तिस्वरूप हैं। श्री सीताजी, श्री रामचन्द्रजी एवं श्री लखनलाल जी सर्वदा आपके हृदयकमलासन पर विराजमान रहते हैं। इसलिए हे सुरभूप! हे देवराज आञ्जनेय!! आप प्रेम सारसर्वस्वरूपा जगन्माता जनकात्मजा श्री जानकी जी, सौन्दर्यसार-सर्वस्वस्वरूप, सत्यसनातन धर्म विग्रहरूप जगत्पिता-जगदीश-जगदाधार दशरथनंदन- सूर्यकुलभूषण-अवधचन्द्र प्रभु श्रीरामचन्द्रजी एवं शेषवतार- सेवावतार-सुमित्रानंदन रामानुज श्री लक्ष्मण जी के साथ मेरे हृदयारविन्द में शाश्वतकाल या चिरकाल के लिए बस जाइए। बस, यही मेरी छोटी-सी विनती है, प्रार्थना है, वंदना है, अर्चना है।

समाप्त